CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम-द्वय मन्त्र

— व्याख्याकार वैदेहीकान्त शरण

श्री-रामद्वयमन्त्रमद्भुततमं वाक्यद्वयं षट्पदं,

वाणाक्षिप्र मिताक्षरं तु खलु विद्धि त्वं दशार्थान्वितम्,

युक्तं तत् त्रिपदैस्तु तत्र सुमते पूर्वं शुभस्यास्पदं

वाक्यं पंचदशाक्षरं तदनु दिग्वर्णात्मकं तूत्तरम्॥

"श्री वै० म० भा० २१।२५"

विषय :— इस श्लोक में श्रीरामद्वयमन्त्र के स्वरूप, अकार-प्रकार, रूपरेखा, शब्दसौष्ठव, पदयोजना एवं रहस्यों का दिग्दर्शन है।

व्याख्या - श्री = परम रस ('अथ या एतेषां सप्तानां पुरुषाणां श्रीः यो रस आसीत् तमूर्ध्वं समुदौहम्- शतपथम् ।' 'ऋचः सामानानि यजूंषि सा हि श्रीरमृतासताम् - वैत्तिरीयारण्यकम् ।') संपत्ति (संपत्तिः श्रीश्च लक्ष मीश्च - अ० को २। ८। ८२)। वेश, रचना, शोभा, सरस्वती, लक्ष्मी, त्रिवर्ग संपत्ति विविध उपकरण ८'श्रीर्वेश रचना शोभा भारती सरलदुमे॥ लक्ष्मी त्रिवर्ग समपत्ति विधोकरणेषु। विभूतौ च मतौ च स्त्री - मे० रान्तवर्ग १—२) 'लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया। इन्दिरालोक माता मा क्षीरोदतनया रमा। भार्गवी लोकजननी क्षीरसागर कन्यका॥ अ० को० १।१।२७ ।' 'श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या- शु० य० ३१।२२ ।' आचार्य चरण ने श्री पद का अर्थ आगे सर्वाधीश्वर श्रीराम जी की प्राप्ति कराने वाली सीता जी कहा है- "सर्वाधीशेश्वरस्याप्तिर्हेतुरगाभिधीयते सीता पुरुषकारार्था श्रीत्यनेन पदेन तु" श्लो० २।२६ ।' 'विभुत्वतो निर्भता परैस्तैः श्रीव्याप्तिराख्यैरभिधीयते हि। प्रपंच निर्मातृ विरन्चिहेतु श्रीरामपादाब्ज निविष्टचित्तैः॥ नित्यं सा पुरुषकार-भूता सीताऽनपायिनी। अनुपायान्तरैर्विज्ञैरुच्यते तदुपायता॥ श्लो० ४-४५-४६॥ राम= रामत्पर ब्रह्म-श्री-राम (विश्वं जातं यतोद्धा यदवितमखिलं लीयते यत्र चान्ते, सूर्यो यत्तेजसेन्दुः सकलमविरतं भासयत्येतदेषः यद्भीत्या वातिवातोऽवनिरपि सुतलं याति नैवेश्वरोज्ञः, साक्षी कूटस्थ एको बहुशुभगुणवानव्ययो विश्वभर्त्ता॥ श्रीमानर्च्यः शरण्यो बहु विधविबुधैर्योगि — गम्याङ्घ्रिपद्मोऽस्पृश्यः क्लेशादिभिः सत्समुदित सुयशाः सूरिमान्यो वदान्यः। शश्वच्छ्रीरामचन्द्रः सुमहितमहिमा साधु-वेदैरशेषैर्निर्मृत्युः सर्वशक्तिर्विकलुष विजरो गीर्मनोव्यां गम्यः॥

॥ श्लो० १।८-९।'

द्वय = द्वय पद संख्या वाचक है, अर्थ होता है - दो, यहां पर यह द्वय पद श्री-सीता एवं राम इन दोनों का प्रकाशक होने से श्री-राम द्वयं कहा गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन्त्रम्-मननात्रायते इति मन्त्रः' 'वेद भेदे गुप्तवादे मन्त्रः' आदि लक्षण एवं अभिधान से प्रोक्त वैदिक परम्परा -प्राप्त- गोपनीय एवं मनन करने पर रक्षा करने वाला अक्षर समूह मन्त्र कहा जाता है। यह हमारे आचरण का भी अनु-प्रेरक है। वेद ऋषि कहते हैं कि मन्त्र (मन्त्रार्थ) के अनुसार आचरण करें- 'मन्त्र श्रुत्यं चराभसि' सामवेद पूर्वार्चिक १७६। यहाँ 'श्रीरामद्वयमन्त्रम्' कहा गया है। इसके दो अर्थ निष्पन्न होते हैं - (१) श्रीराम जी का द्वयमंत्र (दो वाक्यों वाला मन्त्र अथवा दो मंत्र, (२) श्री (सीताजी) का मंत्र और रामजी का मंत्र (अर्थात् सीता जी और राम जी इन दोनों का ही मंत्र यहाँ 'मन्त्रम्' यह एक वचन पर दोनों ही वाक्यों एवं दोनों ही देवताओं की अभिन्नता एवं एकत्व के ज्ञापन के लिए है, अतः श्री राम जी का द्वयमंत्र (दो वाक्य वाला मंत्र) एक ही मंत्र हैं, दो मंत्र नहीं। इस प्रकार श्रीराम द्वय मंत्र एवं सीता द्वय मंत्र भी एक ही मंत्र है, दो नहीं- ऐसा एकवचनान्त पद 'मन्त्रम्' से सिद्ध है। इसे ही 'मता पुरुषकारस्य नित्यसम्बन्ध उच्यते' - श्लो० २-२६ में दर्शित किया गया है। 'श्री- मद्रामचन्द्र' पद से श्री (सीता) और राम में समानाधिकरण्य और एकत्व बताया गया है।

अद्भुततम् = विस्मयोऽद्भूतमाश्चर्यं चित्रम् अ० को० १।७।१९ विलक्षण वस्तु को अद्भुत कहते हैं। यह श्रीमद्रामद्वयमन्त्र सर्व विलक्षण ही नहीं अपितु परम विलक्षण है। इससे बढ़कर कोई भी विलक्षण नहीं है, न था और नहीं हो सकता है। इस मंत्र को परम अद्भुत होने के कारण- श्रीमन्तं श्रुतिवेद्यमद्भुतगुणग्रामाग्र्य-रत्नाकरं -श्लो० १।१' एवं श्री सीता जी भीं ऐश्वर्यं यदपाङ्गसंश्रयमिदं भोग्यं दिगीशैर्जगच्चित्रं चाखिलमद्भुतं शुभगुणा वात्सल्यसीमा च या, विद्युत्पुंज समान कान्तिमितक्षान्तिः सुपदनेक्षणा - श्लो० १।२' अद्भुततम है। अतः मन्त्र के प्रतिपाद्य देवता के अद्भुततम होने से यह मन्त्र भी अद्भुततम सिद्ध है। इस मन्त्र में आकारिक और वास्तविक दोनो प्रकार की अद्भुतता है। इसके आकारिक औद्दभुत्य का दिग्दर्शन इसी प्रस्तुत श्लो० २।२५ में ही "वाक्यं द्वयं षट्पदं - वर्णात्मक तूत्तरम्" वाक्य में कराया गया है एवं वास्तविक उद्भुतता का दिग्दर्शन अग्रिम श्लोक २।२६-३४ में कराया गया है ।

वाक्य = 'वाक्यं पद समूहः स्यात्।' 'तिङ्सुबन्त चयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता- अ० को १।६।२।' शब्द अथवा शब्दों का समूह जो पूर्व अर्थ वा भाव प्रकट करता है वाक्य कहलाता है भाषा विचार का व्यंजक है और विचार वस्तु का जब हमारा मानसिक निर्णय भाषा द्वारा व्यक्त (प्रकाशित) होता है, तब वह वाक्य कहलाता है। प्रत्येक वाक्य के तीन अंग हैं - (१) उद्देश्य (२) विधेय और (३) संयोजन। वाक्य मानसिक निर्णय और आन्तरिक भावनाओं की शाब्दिक अभिव्यक्ति है। यह तत्त्व का ज्ञापक और प्रतिपादक है।

द्वयम् = श्री राम मंत्र को 'वाक्यद्वयम्' इसलिए कहा गया है कि इसमें दो वाक्य हैं - (१) श्रीमद्रामचन्द्र चरणौ शरणं पपद्ये।' एवं (२) श्री मते रामचन्द्राय मनः। ये दोनों ही तिङ्सुबन्त युक्त क्रिया और कारक पूर्ण उद्देश्य विधेय लक्षण युक्त पूर्ण अर्थ एवं भाव को प्रकट करने वाले हैं। अतः इनका वाक्यद्वयम् होना सिद्ध है। पुनः यह मन्त्र दो बातों– (१) शरणग्रहण करना और (२) नमस्कार करना को बतलाने वाला होने से भी वाक्य द्वयम् है। इसी प्रकार यह मंत्र श्री राम जी के साथ ही श्री सीता जी के सम्बन्ध में भी ज्ञापन कराने के कारण भी वाक्यद्वयम् है। दोनों वाक्यो कों उद्देश्य पद (श्री रामचन्द्र) एक ही है और क्रिया पद दो हैं – (१) शरणं प्रपद्ये एवं (२) आय नमः। दोनों क्रिया-पद परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं। 'शरणं प्रपद्ये' संकल्प-वाक्य है और 'नमः' क्रिया वाक्य। दोनों परस्परापेक्षित हैं।

षट्पदम् = 'पदं व्यवस्थित त्राण स्थान लक्ष्माङ्घ्रिवस्तुषु अमरकोष ३।३।९६ ॥" पदम् 'न' के व्यवसाय रक्षा, स्थान, चिन्ह, पैर, शब्द, वाक्य, एक वस्तु और उपदेश ये दश अर्थ होते हैं। व्याकरण शास्त्रानुसार जिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शब्दो के अन्त में सुप् और तिङ् प्रत्यय हो उसकी पद संज्ञा होती है– 'सुप्तिङन्तं पदम्" पा० १।४।१४ " किन्तु तर्कशास्त्रानुसार शब्द और पद में अन्तर है। सभी पद शब्द हैं पर सभी पद नहीं हो सकते हैं। पद होने के लिए शब्दों में शब्द होने के अतिरिक्त इस गुण का भी रहना आवश्यक है कि वे स्वतंत्र रूप से किसी वाक्य के उद्देश्य अथवा विधेय बन सके। सभी शब्दों में वाक्य के उद्देश्य अथवा विधेय बनने की शक्ति नहीं है। अतः सभी शब्द पद नहीं बन सकते। अतः केवल वे शब्द या शब्द समूह जो स्वतंत्र रूप से किसी भी वाक्य के उद्देश्य या विधेय हो सकते हैं या होते हैं पद कहलाते हैं। न्यायशास्त्रानुसार शक्तिमान पद कहा जाता है। जिस शब्द में एक अर्थ विशेष द्योतन करने की शक्ति रहती है, वह पद कहलाता है अस्मात्पदादयमर्थो बोद्धव्यः ईश्वर संकेतः शक्तिः' तर्कसंग्रहः, इस पद से इस अर्थ का बोध होता है, यह संकेत ईश्वरीय है। यहाँ प्रस्तुत राम द्वय मन्त्र में प्रयुक्त शब्दों का संकेत ईश्वरीय है। ऐसा बोध कराने के लिए आचार्य चरण ने यहाँ 'पदम्' शब्द का व्यवहार किया है। षट् पद संख्या वाचक है। पद्यते ज्ञायते अनेन इति पदम्' इस व्युत्पत्ति के अनुसार पद शब्द का अर्थ प्रत्यायक (बोधक) है। जिस प्रकार षट्दर्शनों (न्याय, वैशेषिक, सांख्ययोग, मीमांसा, वेदान्त) से परब्रह्म परमेश्वर का बोध एवं उनकी प्राप्ति का उपाय (साधनबोध) तथा दर्शन (फल) होने से उन्हें षट्दर्शन कहा जाता है। उसी प्रकार इस द्वय मंत्र के षट्पदं (प्रत्यायकं) से भी परात्पर ब्रह्म श्री राम का बोध उनकी प्राप्ति का प्रत्यय (उपाय) एवं उनका दर्शन और प्राप्ति होता है। अतः षट्पदं का व्यवहार हुआ है। श्रीरामद्वय मंत्र के षट्पदम् कहने में अनेक रहस्य हैं। तारक मंत्र षडक्षर है (रसमितशुभदस्वक्षरः श्लो० २।१) तो द्वयमन्त्र षट्पद (षट्पदं श्लो० २।२५) है। यह दोनो का साधर्म्य, समानाधिकण्य, एक रूपता एवं एक वाक्यता का निरूपक है। दोनों का रस (रसास्वादन स्नेहयोः) एवं शुभद साधर्म्य का प्रतिपादक है। तारक मंत्र के समान ही यह द्वयमंत्र भी षड्व्याप्ति भेदक (श्रुति मुनि गतितोत्कृष्टषड् व्याप्तिभेदम्- श्लो० २।३) अर्थात् नाम, रूप, यश, गुण, स्वरूप मन्त्र-इन षड्व्याप्ति पूर्ण है। जहाँ तारक मन्त्र में षड्अक्षर है वहाँ द्वय मंत्र में षट् पद है इस प्रकार मूल तारक मंत्र का ही विकांस यह द्वय मंत्र है। अतः द्वय मंत्र का ही अंग (वृक्ष-पल्लव, फूल-फल) रूप यह द्वयमंत्र है। हिन्दू-शास्त्रों के अनुसार सर्वत्र षडङ्गों की ही कल्पना वा मान्यता है। पूजा काल में एवं श्रीरामभक्त जप काल में भी षट् अंग न्यास ही किया जाता है। ज्ञान पुरुष रूप वेद भगवान् के भी षट् अंग ही हैं – कन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते। ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते। शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्। 'तस्मात् सांगमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥ पणिनीय शिक्षा ४१-४२ ॥" इस प्रकार भगवन् मंत्र के भी छः अंग है और उन छः अंगों के साथ उनका सांग अध्ययन एवं उपासना करने से ब्रह्म लोक (साकेत) की प्राप्ति होती है। 'अभिधानकोशतः पदार्थः निश्चयः १।३।५ पदाधानोद्धरणमवेक्षणम् १।३।१५। काव्यालंकार सूत्र॥" अतः इस द्वय मंत्र का अभिधान कोश के परिज्ञान से पदों के ठीक अर्थ का अनुसन्धान करना चाहिए एवं इन षट् पदों की रचना विशेष में रखे हुए उनके सौन्दर्य और उपयोगिता की परीक्षा किये हुए अर्थात् उनके अवेक्षण को स्थान्य परिवर्तन, परिवर्तन वा क्रम भेदकर नष्ट नहीं करना चाहिए – ऐसा ही उस 'षट्पदं' में प्रयुक्त 'पदं' पद से सिद्ध होता है। जिस प्रकार – संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियमेव च। अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम्॥" के छः लक्षणों से सूत्र का ज्ञापन होता है। उसी प्रकार श्री राम तारक मन्त्र के छः अक्षरों एवं श्री रामद्वयमंत्र के छः पदों से इन मंत्रों का ज्ञापन होता है। षट्पद नाम भ्रमर का है – "मधुव्रतो मधुकरो मधुलिण्मधुपालिनः। द्विरेफ पुष्पलिङ्ग भृङ्ग षट्पद भ्रमरालयः॥ अ० को० २।५।२९॥" इस प्रकार षट्पद होने से यह श्रीरामद्वयमत्र भी भ्रमर रूप है। जिस प्रकार भ्रमर पुण्य के ही चारों ओर भ्रमर रूप अपने षट्पद द्वारा परात्पर ब्रह्म श्रीराम जी के चरणारविन्द के मधुरस का पान करता है– "पद कमलपरागा रस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुरागाममन मधुप करै पाना।" षट्कर्मा नाम ब्राह्मण का है– "षट्कर्मा यागादिभिर्वृतः – अ० को० २।७।४" अतः यह षट्पद द्वयमंत्र ब्राह्मण के यागादि षट् कर्म रूप है।

अब इस द्वयमंत्र के षट्पदों का विभाग बतलाया जाता है। यह द्वयमंत्र समष्टि रूप से षट्पद है– (१) श्रीमद्रामचन्द्रचरणौ (२) शरणं (३) प्रपद्ये (४) श्रीमते (५) रामचन्द्राय (६) नमः॥" इस प्रकार यह द्वयमंत्र व्यष्टि रूप से भी षट्पद है – प्रथम वाक्य (१) श्री (२) मत् (३) रामचन्द्र (४) चरणौ (५) शरणं (६) प्रपद्ये द्वितीय वाक्य (१) श्री (२) मते (३) रामचन्द्र (४) आय (५) न (६) मः॥ पुनः दोनों वाक्यों में उद्देश्यपद (श्रीमतेरामचन्द्राय) उभयनिष्ठ है। अतः उनका एक ही बार गणना करने पर षट्पद इस प्रकार बनते हैं – (१) श्री (२) मद् (३) रामचन्द्र (४) चरणौ (५) शरणं प्रपद्ये (६) नमः। अतः दोनों ही वाक्यों में ये ही मूल छः पद हैं ।

बाणाक्षिप्रमिताक्षरम् = बाण शब्द का अर्थ तीर होता है – "पृषत्कः वाण् विशिखा अजिह्मग खगाशुगाः। कलम्बमार्गन शराः पत्रीरोप इषु द्वर्योः॥ अ० को० २।८।८६-८७।" आक्षिका अर्थ नेत्र होता है– "लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी॥ अ० को० २।६।९३॥" प्रमित का अर्थ प्रमाण एवं यथार्थ ज्ञान होता है – "प्रमितौ प्रभा– अ० को० ३।२।१०॥" "यत् अर्थं विज्ञानं साप्रमितिः वा० भा० १।१।१।" अक्षर शब्द का मोक्ष– परब्रह्म, वर्ण, प्रकाश, धर्म, तप, मूलकारण अपामार्ग– ये आठ अर्थ होते हैं – अक्षरं तु मोक्षेऽपि अ० को० ३।३।१८२॥" यहाँ "वाणाक्षिप्रमिताक्षरम्' शब्द में वाण का सांकेतिक अर्थ पांच संख्या है क्यों कि कामदेव के पाँच वाण प्रसिद्ध हैं (अरविन्दमशोकं च चूतं च नवमल्लिका। नीलोत्पल च पंचैते पंचवाणस्य सायकाः॥ अ० को० क्षे०॥" अक्षिका साङ्केतिक अर्थ दो संख्या है। क्योंकि सर्वत्र दो नेत्र प्रसिद्ध है। एक नेत्र केवल कौआ को ही होता है – 'स एव च चिरंजीवी चैकदृष्टिश्च मौकुलिः। अ०को० क्षे०)।' त्रिनेत्र केवल शंकर है और सहस्र नेत्र इन्द्र)॥" अतः अंकानां वामतो गतिः के अनुसार बाणाक्षि का सांकेतिक अर्थ पच्चीस संख्या है अक्षर शब्द का अर्थ वर्ण है प्रमित शब्द निश्चितार्थक है। अतः 'बाणाक्षिप्रमिताक्षरम्" का अर्थ हुआ पच्चीस अक्षरों वाला। इस श्री रामद्वय मंत्र में "श्री१ म२ द्रा३ म४ च५ न्द्र६ च७ र८ णौ९ श१० र११ णं१२ प्र१३ प१४ द्ये१५। श्री१६ म१७ ते१८ रा१९ म२० च२१ न्द्रा२२ य२३ न२४ मः२५॥" ये पच्चीस अक्षर हैं। पुनः बाण शब्द का सांकेतिक अर्थ ५ संख्या इसके अनुमान प्रमाण के पंचावयव (प्रतिज्ञा-हेतु उदाहरण -उपनय-निगमन) एवं पंचरूप (तानि पंचरूपाणि पक्ष सत्वं, सपक्षत्वं, विपक्षव्यवृत्तिः, अबाधित विषयत्वं, असत्प्रतिपक्षत्वं चेति)।' का बोधक होने से अनुमान प्रमाण का बोधक है। इसी प्रकार अक्षि शब्द प्रति+अक्षण = प्रत्यक्षम्' अथवा 'अक्षमाक्षं प्रतीत्योत्पद्यते इति प्रत्यक्षम्" से यहाँ प्रत्यक्ष प्रमाण का बोधक है। अक्षि का सांकेतिक अर्थ दो संख्या प्रत्यक्ष के लौकिक प्रत्यक्ष एवं अलौकिक प्रत्यक्ष इन दोनों भेदों का बोधक है। यहाँ 'बाणाक्षि' का अंकानां वामतोगतिः के अनुसार प्रथम प्रत्यक्ष तब अनुमान – इस क्रम का निरुपण है। अक्षर पद शब्द प्रमाण का बोधक है। अतः 'बाणाक्षिप्रमिताक्षरम्' का अर्थ हुआ कि यह रामद्वयमंत्र 'त्रिधा प्रमाणमध्यक्षानुमानशब्दभेदतः के अनुसार प्रत्यक्ष अनुमान– शब्द इन सभी प्रमाणों से प्रमाणित है। इसी प्रकार इसका बाण पद – धनुर्गृहीत्वौपनिषदं महा, शरं हुयुपासानिशतं सन्धयीत। आयभ्य तद्भागवगतेन चेतसा, लक्ष्यं तदेवाक्षरं सोभ्यविद्धि। प्रणवोधनुः शरोह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते। अप्रमत्तेन वेधव्यं शरवत्तनमयो भवेत्॥ मु० २।२।३-४।' का बोधक और अक्षि पद– 'न तु मां शवयसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा। दिव्यं ददामि ते चक्षु पश्य में योगमैश्वरम्॥' में कथित दिव्य चक्षु का बोधक है। इस प्रकार यह श्रीराम द्वय मंत्र श्रीरामजी के ईश्वरीय रूप का साक्षात्कार करने वाला है– इस तत्व का बोधक यह 'बाणाक्षिप्रमिताक्षरम्' पद है। इसके अतिरिक्त यह बाण पद इस श्री रामद्वय मंत्र की अमोघता (जिमि अमोघ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रघुपति करबाणा) एवं भव वारिधि शोषण (लक्षिमण वाण सरास आनू। शोषौ वारिधि विशिख कृशानु ॥) आदि तथा प्रव्यूहव्यूहभंग——रामशस्त्रास्त्रसंघः ।' आदि का भी ज्ञापक है, अक्षि पद "राजीव नयन धरे धनु शायक। भक्त विपत्ति भंजन सुखदायक ॥" आदि का बोधक है। इस द्वयमंत्र के पच्चीस अक्षर अविनाशी है। अतः इन्हें अक्षर (नित्य) शब्द से ज्ञापित किया गया है। पुनः यह 'बाणाक्षिप्रमिताक्षरं' अर्थात् पच्चीस अक्षर प्रमित पद पच्चीस तत्वो में चौबीस तत्वों से मुक्ति तथा पच्चीसवें तत्व ईश्वर की प्राप्ति का साधक है। ऐसा इसके मोक्ष वाचक अक्षर पद से ज्ञापित है। प्रमित पद इस द्वय मंत्र की प्रमाणिकता का निरुपक है। तु= यहाँ 'तु' पद पाद पूरण के अतिरिक्त श्रीरामद्वयमंत्र की अवधारण (निश्चयीकरण) के लिए भी प्रयुक्त है– 'तु स्याद्भेदेऽवधारणे– अ०को० ३।३।२४२ ॥" खलु– यहाँ खलु' पद वाच्यालंकार के अतिरिक्त जिज्ञासा अनुनय और संशय निषेध के लिए भी प्रयुक्त है– "निषेधवाक्यालंकार जिज्ञासाऽनुनये खलु अ०को० ३।३।२५५।'

विद्धि= यहाँ विद्धि (विद् ज्ञाने, विद् विचारणे) क्रिया पद ज्ञापनार्थ, ज्ञानार्थ एवं विचारणार्थ प्रयुक्त है। लोट् लकार से प्रश्न कर्त्ता जिज्ञासु श्री सुरसरानन्द जी को एवं समस्त जिज्ञासु जगत् को जानने एवं विचारने (मनन करने) का परामर्श आज्ञा वा आदेश दिया गया है। लोट लकार मध्यम पुरुष में आज्ञा अथवा मृदु उपदेश वा मन्त्रणा के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

त्वं = यह युष्मद् सर्वनाम प्रत्यक्ष उपस्थित प्रश्नकर्त्ता श्री सुरसरानन्द जी के व्याज से सभी मोक्षार्थी जीवों के लिए प्रयुक्त है।

दशार्थान्वितम् = दश पद संख्या वाचक है। अभिधेय, प्रयोजन आदि को अर्थ कहते हैं– 'अर्थोऽभिधेयरैवस्तु प्रयोजन निवृत्तिषु अ० को० ३।३।८६।" साहचर्य एकत्र स्थिति एवं तज्जन्य (सन्तान) को अन्वय कहते हैं– "साध्यसाधनयोः साहचर्यमन्वयः (पदकृत्य) तत्सत्त्वे तत्सत्ता अन्वयः। सन्ततिगोत्र जनन कुलान्यभिजान्वयौ, वंशोऽन्वयः सन्तानः (अ० को० २।७।१)' 'दर्शार्थान्वितम्' से श्रीरामद्वयमन्त्र के दश पदों (१) श्री (२) मत् (३) रामचन्द्र (४) चरणौ (५) शरणं (६) प्रपद्ये (७) श्रीमते (८) रामचन्द्र (९) आय (१०) नमः ॥' केअर्थों का बोध होता है, जिसका प्रतिपादन आचार्य चरण ने अग्रिम श्लो० २।२६-३१ में इस प्रकार किया है – "सर्वाधीशेश्वरस्याप्तिर्हेतुरत्राभिधीयते। सीतापुरुषकारार्या (१) श्रीत्यनेन पदे न तु ॥ (२) मता पुरुषकारस्य नित्य सम्बन्ध उच्यते। ३ रामचन्द्रेति पदतो वात्सल्यादि गुणस्य च ॥ ४ चरणावित्यनेनैव वात्सल्यादिक सीतयोः। विलक्षणस्य दिव्यस्य विग्रहस्याश्रयस्य च ॥ ५ शरणेतिपदेनैवोपायस्तविग्रहो बुधैः। उपायाध्यवसायस्तु ६ प्रपद्येति प्रतिपाद्यते ॥ प्राप्यमिथुनमेवोति ७ श्रीमते पदतोमतं ८ रामचन्द्रेतिपदतः स्वामित्व प्रतिपाद्यते ९ विभत्तयायेति पदतः शेषवृत्तिर्महात्मभिः। विरोधिनो निरासस्तु १० नमः पदेन वर्ण्यते ॥ २।२६-३१ ॥" इस प्रकार उक्त दश पदों उनके कथित अर्थों में साध्य साधन भाव एवं नित्यसाहचर्य तथा अभिव्यक्ति है। इसीप्रकार "दशार्थान्वितं" पद का तात्पर्य दश प्रकारक अर्थों से है (अवयवार्थ और समुदायार्थ) १.तात्पर्यार्थ २. वाक्यार्थ ३. प्रधानार्थ ४. अनुसन्धानार्थ ५. शब्दार्थ ६. इष्टार्थ ७. अभिधार्थ ८. लक्षणार्थ ९. व्यंजनार्थ १०. सांकेतार्थ। इसमें प्रथम चार प्रकारक अर्थों (तात्पर्यार्थ, वाक्यार्थ, प्रधानार्थ, अनुसन्धानार्थ) का प्रतिपादन स्वयं आचार्य ने ही श्लो० ३२-३४ में इस प्रकार किया है– "तात्पर्यार्थोस्य विज्ञेयः आचार्यरुचिसंश्रयः। वाक्यार्थो मंत्ररत्नस्य त्वथ निर्णीयते बुधैः। प्राप्यप्रापकसम्बन्धस्वरूपाभिनिरुपणम्। प्रधानार्थस्तु तद्युग्मकैंकर्यस्य प्रधानता ॥ स्वदोषाभ्यनुसंधानमनुसंध्यर्थ उच्यते। एवमेवानु संध्येयं मोक्षकामैरहर्दिवम् १२।३२-३४ ॥" पांचवाँ शब्दार्थ के सम्बन्ध में भामह कहाते है "शब्दार्थो सहितं काव्यम्"। 'अनन्यलभ्य एवहि शब्दार्थः छठे 'इष्टार्थ' के सम्बन्ध में दण्डि ने कहा है "इष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली।" सप्तम से नवम 'अभिधार्थ, लक्षणार्थ एवं व्यंजनार्थ' का निरूपण न्याय ग्रन्थों एवं काव्यों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में बहुत ही विस्तार के साथ किया गया है। दश में 'संकेतार्थ' का प्रयोग ज्योतिषशास्त्रों, गणितशास्त्रों एवं काव्यशास्त्रों में द्रष्टव्य है। यह श्रीराम द्वयमंत्र इन दश प्रकार के अर्थों से अन्वित है ऐसा इसके 'दशार्थान्वितम्' पद से ज्ञात होता है। इसी प्रकार 'दशार्थान्वितम् पद से काव्य के दश अर्थ गुण (श्लेषः प्रसादः समता, समाधि, माधुर्य, ओजः पदसौकुमार्यम्। अर्थस्य च व्यक्तिरुदारता च, कान्तिश्च काव्यस्य गुणा दशैते 'भरत' श्लेषः प्रसादः श्लेष समता समाधि माधुर्य-सौकुमार्य-उदारताऽर्थ व्यक्तिकान्तयो बन्धगुणाः ॥ वामन ॥" "त एवार्थ गुणाः =वामन ॥ का बोध होता है। इसका थोड़ा संकेत यहाँ किया जाता है। श्रीराम द्वयमंत्र में राम के साथ चन्द्रपद का प्रयोग हुआ है। यह चन्द्र सम्बन्धी अनेक अर्थों का ज्ञापक है– सज्जन सकृत सिंधु सम कोई। देखि पुर विधु बाढ़इ सोई ॥ प्रकटेउ जहाँ रघुपति शशि चारु। विश्व सुखद खल कमल तुषारू ॥ भगति सुतीय कल करण विभूषण जगहित हेतु विमल विधूपूषण ॥ रामचरित राकेश कर, सरिस सुखद सब काहु। सज्जन कुमुद चकोर चित, हित विशेष बड़ लाहु ॥ रामचन्द्र मुख चन्द्रछवि, लोचन चारु चकोर। करत पान सादर सुखद, प्रेम प्रमोद न थोर ॥ हृदय अनुग्रह इन्दु प्रकाशा। सूचित किरण मनोहर हासा ॥ भए मगन देखत मुख सेवा। जनु चकोर पूरण शशि लोभा ॥ सहज विराग मन मोरा। थकित होत जिमि चन्द्र चकोरा ॥ इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा। वरबश ब्रह्म सुखहि मन त्यागा ॥ अधिक जिमि चन्द्र चकोरा ॥ इन्हहि विलोकत अति अनुरागा। वरवश ब्रह्म सुखहि मन त्यागा। अधिक सनेह देह भए भोरी। सरद शशिहि जिमि चितव चकोरी ॥ 'आदि' इस प्रकार काव्यशास्त्र के दश अर्थ गुणों के परिप्रेक्ष्य में किये गये अर्थों का निरुपक यह आचार्योपदिष्ट दशार्थान्वितम् पद है।

युक्तम्= युक्ति युक्त नियमबद्ध– "युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत्। न्यायं च त्रिषु षट्। अ० को० २।८।२४-२५।

तत्= श्रीरामद्वयमंत्र की विशेषता का बोधक सर्वनाम।

त्रिपदैः त्रिसंख्यावाचक है। पद का अर्थ चरण एवं वर्ण (अक्षर) समूह होता है। इस रामद्वय मंत्र के पूर्व मंत्र (खण्ड) में भी तीन पद– 'श्रीमते, २.-रामचन्द्राय ३. नमः' है सप्त पद से मैत्री (साप्तपदीनां संख्यम्- पा० ५।२।२२) होती है एवं त्रिपद से शरणागति। एक पग में दो चरण होते हैं। शरणागति के प्रथम पग का दो चरण 'अनुकूलस्य संकल्पः - प्रतिकूलस्य वर्जनम्' द्वितीय पग का दो चरण 'रक्षिष्यतीति विश्वासः - गोप्तृत्वं वरणम्, तृतीय पग का दो चरण 'आत्मनिक्षेप- कार्पण्य' होता है। इस प्रकार त्रिपग शरणागति का बोधक है। इसे ही वेद भगवान् कहते हैं 'इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरुथं स्वस्तये। छर्दिर्यच्छ मघवद्भयश्च मह्यं च गावया दिद्युमेभ्यः ॥ सा० २६६ ॥ अर्थात् हे परमेश्वर तीनो लोक अपने कल्याण के लिए आपके शरण में है आप सभी के लिए प्रकाशमय स्वधान (साकेत) प्रदान कीजिये ॥" परमेश्वर ने अपने तृतीय पद से बलि के शरीर को मापकर उसे अपना चरणाश्रित (शरणागति) किया था – "इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूलस्य पांसुले ॥ त्रीणि पदा क्रिवचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन् ॥ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्॥ ऋ० १।१२।१६-२१ ॥ इसका भी स्मारक आचार्योक्त "त्रिपदैः" पद हैं। क्योंकि यह द्वयमंत्र और ये वेद मंत्र दोनों ही परात्पर ब्रह्म के चरणों की उपासना और चरणाश्रित होने के विषय के ही प्रतिपादक होने से इनमें एक विषयता है। "यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्य अक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति। य उ त्रिधातु पृथिवीमुताद्याम् एको दाधार भुवनानि विश्वा ॥ ऋ० १।१५४।२ ॥" भी इसी तत्व का ज्ञापक है। यदि त्रिपदैः पद से यहाँ तीन प्रकारक वाक्य का ही आग्रह किया जाए तो 'त्रिपदैः' के द्वारा– "चत्वारि वाक्यमरिमितानि पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः। गुहा त्रिणि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निहतानेंगयन्ति.पदानि तानि विदु ब्राह्मणा ये मनीषिणः । गुहा त्रिणि निहितानेंगयन्ति पदानि तानि विदु ब्राह्मणा ये मनीषिणः । गुहा त्रिणि निहितानेंगयान्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति ॥ ऋ० १।१६४।४५ ॥" में प्रोक्त गुहास्थित पदों का संकेत है । एवं– 'तिस्त्रो वाच ईरयाति प्र ब्रह्मिर्ऋतस्य धाति ब्रह्मणो मनीषाम् । गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वा वशानाः ॥ सा ५२५ ॥" का भी बोधक है ।

सुमते= सुमते का अर्थ है– हे सुन्दर बुद्धि वाले । यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से यह पद जिज्ञासु भी सुरसरानन्द जी के लिए प्रयुक्त हुआ है । तथापि अप्रत्यक्ष रूप से इसका संकेत मंत्र के अधिकारी के निरुपण में है । सुन्दर विचार (वाले) ही इस मंत्र के अधिकारी है । दुष्ट विचार वाले अश्रद्धालु व्यक्ति नहीं "तमुस्तोतारः पूर्व्यं यथा विद् ऋतस्य गर्भं जनुषा पिपर्तन । अस्य जानन्तोनाम चिद् विवक्तान महस्ते विष्णो सुमतिं भजामहे ॥ ऋ १।१५६।३॥"

पूर्वम् = यह पूर्वपद क्रम निरुपक है और रामद्वय मंत्र के पूर्व वाक्य (श्रीमद्रामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये) के लिए प्रयुक्त हुआ है । यह पूर्वपद आगे कहे जाने वाले उत्तर पद का पूर्वापर आनुपूर्वी सम्बन्ध बोधक परस्परापेक्ष है । उत्तर पद के साथ संगति, सामंजस, समन्वयं एवं एकव्यक्तिद्योतन के लिए यह पूर्वम् पद यहाँ व्यवहृत हुआ है । पुनः 'पूर्वम्' पद 'उत्तर' पद के साथ मिलकर द्वयमंत्र का वाक्य विभाजन और द्विविभागत्व स्थापित करता है। न्यायशास्त्र में पूर्व और उत्तर पद क्रमनिर्देश के अतिरिक्त प्रश्नोत्तर निरुपक भी है ।

शुभस्य = शुभ का अर्थ परम कल्याण का या मोक्ष है– "श्वः श्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मंगलं शुभम् । अ० को० १।४।२५ ।" शुभस्य का अर्थ हुआ कल्याण (मोक्ष) का ।

आस्पदम् = आस्पदं का अर्थ है स्थान देने वाला प्रतिष्ठा कृत्यमास्पदम् अ० को० ३।३।९४ ।" शुभस्यास्पदम् का अर्थ हुआ मोक्ष पद देने वाला ।

वाक्यम् = अर्थ प्रतिपादन द्वारा अन्य पदों अथवा अन्य अर्थों के विषय में श्रोता की आकांक्षा को उत्पन्न करने वाले और प्रतीयमान स्पष्ट रूप से परस्पर अन्वयोग अर्थ के प्रतिपादक सन्निधियुक्त पदों का समूह वाक्य कहलाता है – "अर्थ प्रतिपादन द्वारा श्रोतुः पदान्तर विषयामर्थान्तर विषयां वाकाङ्क्षा जनयतां प्रतीयमान परस्परान्वययोग्यार्थप्रतिपादकानां सन्निहितानां पदानां समूहो वाक्यम् । त० भा० ॥"

पंचदशाक्षरम्= पंचदशाक्षरम् का अर्थ पन्द्रह अक्षर- १. श्री २. मत् ३. रा ४. म ५.चं ६.द्र ७.च ८. र ९. णौ १०. श ११.र १२. णं १३प्र १४प १५द्ये ।" यदि 'वाक्यं पंचदशाक्षरम्' का विग्रह 'वाक्य पंच' एवं 'दशाक्षरम्' किया जाए तो वाक्यं पंच का अर्थ हुआ - '१ श्री शरणं प्रपद्ये, २. मत् शरणं प्रपद्ये, ३. राम शरणं प्रपद्ये, ४. चन्द्रशरणं प्रपद्ये, ५. चरणौ शरणं प्रपद्ये, ।" एवं दशाक्षरम् का अर्थ इस वाक्य में प्रयुक्त पन्द्रह अक्षरों में दश अक्षर क्योंकि इसमें म, र, और ण दो-दो बार आये हैं । अतः वास्तविक अक्षरों की संख्या दश ही है ।

तद्= यह सर्वनाम श्री रामद्वयमंत्र के लिए प्रयुक्त है ।

अनु= अनु का अर्थ पश्चात्, सादृश्य, लक्षण, तत्त्वाख्यान, भाग, वीप्सा, लम्बाई और वितर्क होता हैं । यहाँ अनुपद पश्चात् के साथ ही पूर्व वाक्य से सादृश्च के अर्थ में भी प्रयुक्त है ।

दिग्वर्णात्मकम् = "दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः । अ० को० १।३।१ । दिक् का सांकेतिक अर्थ दश है क्योंकि दिशायें दश प्रसिद्ध हैं । इस रामद्वयमंत्र का उत्तर वाक्य दश अक्षरों वाला (१श्री २म ३ते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२म ३ते ४रा ५म ६चं ७द्रा ८य ९न १०मः) है। उक्त कोशवचनानुसार यदि दिक् को ककुभ (ककुभोर्जुन) धवल का वाचक माना जाए तो दिग्वर्णात्मकम् का अर्थ होगा धवल वर्ण (अक्षर) अर्थात् भास्कर वर्ण वाला, यदि काष्ठा (कार्षोत्कर्षे स्थितौ) का वाचक माना जाए तो अर्थ होगा उत्कर्ष वृद्धि एवं मर्यादा देनेवाला, यदि आशा का वाचक माना जाए तो अर्थ होगा आशा मनोरथ पूर्ण करनेवाला, यदि हरित का वाचक माना जाए तो अर्थ होगा हरियाली (खुशीयाली) लानेवाला या हरि (श्रीराम) को प्राप्त करनेवाला तु= यहाँ भी 'तु' पद पादपूरण के अतिरिक्त अर्थावधारण के लिए प्रयुक्त हुआ है।

उत्तरम्– उत्तर शब्द का अर्थ उत्तरदिशा, श्रेष्ठ, प्रतिवाक्य (जबाव), पश्चात् आदि होता है। यह उत्तर पद द्वितीय वाक्य– 'श्रीमते रामचन्द्राय नमः' के लिए प्रयुक्त हुआ है जो इसका सम्बन्ध पूर्ववाक्य श्रीमद्रामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये, के साथ प्रतिपादित करता है तथा दोनों वाक्यों के आनुपूर्वी को निरुपित करता है । प्रथम वाक्य 'श्रीमद्रामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये, संकल्प (संकल्पकर्ममानसम्) वाक्य है और द्वितीय वाक्य केवल मन अथवा मन और वचन का ही व्यापार है, जबकि द्वितीय वाक्य, मन, वचन और शरीर-इन तीनों का व्यापार। इस प्रकार पूर्व वाक्य में संकल्प बताया गया है और उत्तर वाक्य में उस संकल्प का कर्म प्रथम सिद्धान्त है और दूसरा व्यवहार । अतः दोनों में नित्य साहचर्य्य, अपृथक सिद्धि सम्बन्ध (व्याप्ति) परस्परापेक्षित्व, पूरकत्व एवं एकत्व ज्ञापन के लिए यहाँ 'पूर्व' एवं 'उत्तर' पदों का व्यवहार हुआ है। दोनों ही एक ही सूत्र में ग्रथित है तथा दोनों ही में एकतानता और एक वाक्यता है। दोनो हीएक ही मंत्र के अंग हैं। सामवेद के पूर्वार्चिक एवं उत्तरार्चिक भागों के समान यहाँ पूर्व और उत्तर पद का प्रयोग है। जिस प्रकार सामवेद के पूर्वार्चिक सिद्धान्त भाग (दैवतकाण्ड) अर्थात् ज्ञानात्मक या उत्तरार्चिक क्रिया भाग (सूक्त) अर्थात् उपासनात्मक या कर्मोपयोग है, उसी प्रकार श्री रामद्वयमंत्र को भी पूर्वभाग संकल्प (ज्ञानात्मक) तथा उत्तरभाग क्रिया (कर्म और उपासना) परक हैं। जिस प्रकार पूर्वमीमांसा में ज्ञान का प्रतिपादन है उसी प्रकार पूर्ववाक्य में ज्ञान एवं उत्तर अर्थ का आग्रह करने पर पूर्व संकल्प वाक्य मनोद्भूत प्रश्नरूप एवं उत्तर क्रिया वाक्य उसका उत्तर रूपसिद्ध है। यदि पूर्व और पदों से दिशा अर्थ का भी आग्रह किया जाए तो पूर्व तथा उत्तर दिशाओं की सन्धिस्थान का नाम ईशान (दिशा) है जो रामद्वय मंत्र के पूर्ण एवं उत्तरवाक्यों की सन्धि (योग से "ईशान मस्यजगतः सा० ६८०" का प्रतिपादक होने से वह भी सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार श्रीरामद्वयमंत्र अनेक रहस्यों का समुद्र है। इसका सतत् मनन करते रहना चाहिए ।

इस लघुलेख में इस मंत्र पर प्रकाश डालना 'खोजहि भानु दीप कर लिन्हें, के समान हास्यास्पद है अस्तु 'थोड़ेहि में जानि अहि सयाने' कहकर विश्राम लेता हूं।

★★★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.